ऋचा

जन्म-तिथि : 1971 ई.

जन्म-स्थान : ग्राम-ढेकवाहा, पो०-पैठाना, जिला-नालन्दा

सिच्छा : स्नातक प्रतिष्ठा (संस्कृत)

पुस्तक : लालसा (कथा संकलन)

हिन्दी-मगही में कहानी, कविता, रिपोर्त्ताज आउ ललित निबंध लिखऽ हथ।

'इँजोर' कहानी मगही अंचल के रहन-सहन, सभ्यता-संस्कृत्ति के निछक्का झलक आउ मगही मट्टी के सुगंध से ओत-प्रोत तो हइए हे। एकरा अलावे ई कहानी में समाज के झकझोरे वला अइसन कथ्य हे, जे पढ़ल-गुनल लड़की के बिआह लेल ओकर बाप के कइसन-कइसन परेसानी आउ तिलक-दहेज ला जे उपेक्षा अपमान होवऽ हे, ओकर जीवन्त चित्र खींचल गेल हे। पढ़ल लड़की जब ससुराल जाहे, तब अप्पन गुन के परिचय देहे। अँधेरा में रहेवाला ससुरारी परिवार के अप्पन ज्ञान आउ व्यक्तित्व के परभाव से इँजोर कर देहे।

इँजोर

पच्छिम में सूरज धीरे-धीरे मोमबत्ती जइसन गल रहल हल आउ एकरे साथ धरती पर साँझ के सुगबुगाहट सुरू हो गेल हल। सूरज जइसहीं अप्पन आखरी किरन समेट के अस्त होयल सांझ अप्पन पैर पसार देलक हल। चहचह करइत चिरईं-चिरगुन्नी अप्पन-अप्पन घोसला में लउटे के आपा-धापी में ख़ूब तेजी से उड़ रहल हल। गाय-गोरू भी अप्पन-अप्पन खूँटा से बंध के भोंकरे लगल हल।

धीरे-धीरे वातावरन में सांति के साम्राज्य फैले लगल हल। काहे कि साँझ के दरवाजा पर रात अप्पन दस्तक दे देलक हल। पूस के कँपकँपावे वला जाड़ा हल। लोग काम-धंधा से निपट के घर में नेहाली तर दुबक गेलन हल। सबके दूरा-दलान

पर ढिबरी-ललटेन जल गेल हल। बूढ़ा-बूढ़ी बोरसी के लह-लह आग आउ हुक्का-चिलिम लेके बइठ गेलन हल। उहाँ दिन भर के थकान से टूटइत सरीर के साथ-साथ बेटा-पुतोह के करतूत से आहत मन अप्पन भड़ास निकाल के अप्पन मन के हलका कर रहलन हल। बच्चा-बुतरू के कटर-मटर, ककहरा-पहाड़ा से दलान गुलजार हो रहल हल। बोरसी के आग मिझा गेल हल। सब बाल-बुतरू अप्पन बोरिया-बस्ता समेट के अप्पन-अप्पन घर दन्ने सोझिया गेलन हल। जाड़ा बढ़ गेल हल । ई चलते लोग सहिये-साँझ घर में दुबक गेलन हल।

चारो तरफ घोर अँधेरा पसर गेल हल। बस झिंगुर के अवाज ही फैलल सन्नाटा के भंग कर रहल हल। दलान पर रक्खल टिमटिमाइत ढिबरी अब भी जल रहल हल। घर के कोना में जग रहलन हल नरायन बाबू । अधरतिया हो रहल हल, मुदा उनकर आँख में दूर-दूर तक नींद के नामो-निसान न हल। कभी ई करवट तो कभी ऊ करवट फटल आँख से ऊ घर के बड़ेरी गिन रहलन हल। कहल जाहे कि पेट भरल रहे आउ मन सांत रहे, तऽ चैन के नींद आवऽ हे। पेट के भूख चाहे मेट भी जाय, मुदा मन सांत न हे तऽ नींद के दूर-दूर तक नामो-निसान न रहे हे। एही बात नरायन बाबू के साथ भी हल। लाख परयास करला पर भी नींद उनकर आँख से कोसो दूर हल, मन एकदम बेचैन हल। मन बेचैन काहे न होयत हल ? बेटी बियाहे के चिन्ता जे सर पर सवार हल। कहाउत भी ठीके कहल गेल हे —'जेकर बेटिया बड़ी हो गेल, ओकर खटिया खड़ी हो गेल'।

कल्हे नरायन बाबू सहर से अप्पन गाँव अयलन हल। सहर के भागम-भाग जिनगी से गाँव में झाँके के फुरसत कहाँ मिलऽ हे, मुदा बेटा-बेटी के बियाह एगो अइसन सवाल हे जेकरा हल करेला बाप-भाई भिर जाहीं पड़ऽ हे। जुआन बेटी के बियाह खातिर नरायन बाबू फिफिहिया हो गेलन हल। जउन अदमी जहाँ-जहाँ लड़का बतावऽ हलन, ऊ उहाँ पहुँच जा हलन। मुदा दरवाजा पर रक्खल धनुस तोड़े वला राम उनका अबतक न मिलल हल। सायद अइसने छन से राजा जनक के भी गुजरे पड़ल हल। तबे तो ऊ बीच स्वयंवर-सभा में कराह के कह उठलन हल—

तजहु मोह निज-निज गृह जाहु
विधि न लिखा बैदेही विवाहु ।।

सताब्दी पर सताब्दी बीतल, अदमी धरती से चाँद पर पहुँच के बसे के तइयारी करे लगल हे, परिवर्तन के आँधी दुनिया के कहाँ से कहाँ पहुँचा देलक, मुदा बदलाव

न आयल तो बेटी के बियाह में। कल जहाँ राजा जनक राजा होके भी विवस आउ लचार खड़ा हलन, आज हर बेटी के बाप राजा जनक बनके खड़ा हथन। पढ़ल-गुनल बेटी रहे के बाद भी नरायन बाबू ओही परेसानी से गुजर रहलन हल। एगो लोकगीत के पंक्ति उनकर मन में रह-रहके उमड़-घुमड़ जा हल—

पूरब खोजलियो बेटी पच्छिम खोजलियो,
हमर धिया के जोगे वर नहिं मिलल,
अब धिया रहतन कुमार ।

एही सब विचार में ऊब-डूब होके नींद के आगोस में समा गेलन हल। पूरब में लाली धपे लगल हल। सूरज के किरन जइसहीं धरती के चुमलक, धरती पर जिनगी के हलचल सुरू हो गेल। एक तो अधेड़ उमर, थकल-माँदल सरीर, ऊपर से बेटी बियाहे के चिन्ता, जेकरा से कोई भी बाप-भाई समय से पहिले बूढ़ा-बूढ़ी नजर आवे लगऽ हथन।

नरायन बाबू थकान के मारल खटिया से उठे के परयास कर रहलन हल। नहा-धोके तइयार होके अप्पन बड़ भाई के साथे आज फिर एगो लड़का देखे ऊ जा रहलन हल । छात्रवास में रखके अप्पन बेटी के पढ़इलन हल । रूपा के मैट्रिक पास होते घर के बड़-बुजुर्ग बियाहेला कहे लगलन हल। बाकि नरायण बाबू अप्पन बेटी के उँचा सिच्छा दिलावे ला अड़ गेलन हल। हलाँकि उनकर आर्थिक हालत ई लायक न हल। मुदा बेटी के ऊँचा सिच्छा दिलावे के हसरत उनकर मन में बड़ी हल। घर के चारो बाल-बच्चा के ऊँचगर सिच्छा दिलावे में कोई कसर न छोड़लन हल। एही त्याग के परिनाम हल कि आज उनकर बेटा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हल आउ बेटी वीमेंस कॉलेज से ग्रेजुएट करके निकल रहल हल।

रूपा के बी.ए.पास कैला पर चारो कोना के देवी-देवता के दूध-बतासा चढ़ा के पुजलन हल। उनकर इच्छा के पूर्ति जे भेल हल। हलाँकि बेटी के जादे पढ़ावे ला उनका अप्पन पत्नी से अक्सर कहा-सुनी हो जा हल। उनकर पत्नी ई विचारधारा के एमदम उल्टा हलन, तइयो ऊ अप्पन पत्नी के समझावइत कहऽ हलन —'तूँ बेटी के बियाह के चिन्ता काहे कर रहलऽ हे। पढ़ल-गुनल बेटी ला तो एक से एक लड़का आउ परिवार मिलत। एगो सिच्छित लड़की से एगो परिवार सिच्छित होवऽ हे। परिवार से एगो सिच्छित समाज के निरमान होवऽ हे। एगो सिच्छित समाज से सिच्छित देस के निरमान होवऽ हे।'

मुदा लड़का खोजे में आज उनका कउन परेसानी से गुजरे पड़ रहल हल। घर-बाहर से बातो सुने पड़ रहल हल, जहाँ उनकर हिम्मत जवाब देवे लगल हल। मुँह के सामने लोग कहे लगलन हल—'न बेटी के एतना पढ़यतऽ हल, न बियाह में एतना पेरसानी होतो हल।'

पढ़ल-लिखल बेटी के कोई कदर न हल। लड़का के बाप दहेज ला सुरसा जइसन मुँह फाड़ले खड़ा मिलऽ हल। लोग के बात आउ दहेज के माँग उनका काँटा जइसन चुभ रहल हल। मुदा देर हे अन्धेर न हे, एही सोच के ऊ सबूरी कर ले हलन। कोई कवि के ई कविता गुनगुना के ऊ अप्पन मन के समझा ले हलन :—

भय से मत घबराना, अगर बादल हो घनेरा,
किसके रोके रुका है सवेरा,
रात जितनी ही संगीन होगी,
सुबह उतनी ही रंगीन होगी।

आखिर कुहासा कबतक रहल हे, सूरज के किरन ओकरा चीर के निकलहीं जाहे। नरायन बाबू के भी समस्या के समाधान हो गेल। एगो मुखियाइन अप्पन पड़ोस के ही पढ़ल-लिखल सुंदर-सुसील लड़का के पता देलन हल। लड़का के बाप बेटी के बियाह के भारी बना दे हथन। ऊ अप्पन बेटा के जनम से लेके पढ़ावे-लिखावे आउ बियाहल घर बसावे के खरचा तक बेटी के बाप से दहेज में माँगे लगऽ हथन। खैर, रूपा के सादी राजेस से तय हो गेल। अप्पन औकात से बढ़के दान दहेज देवे के बात ऊ कर अइलन हल। लड़का आउ घर-परिवार के बारे में पत्नी के पुछला पर ऊ कहलन हल—

बिना दहेज के बेटी से गेठी जोड़े न कोई
दुअरा पर रखल धनुहिया तोड़े न कोई
घरवा पर हे जेकर छप्पर न छानी
सावन-भदोइया में टप-टप टपकऽ हइ पानी
ओहु माँगऽ हे डाला भर सोना, डाल भर रुपइया
हाय राम आ गेलो कइसन समइया।

दरवाजा पर बरात लगाके कमलेस बाबू नरायन बाबू से समधी-मिलन कर लेलन हल। राजेस दुल्हा बनके मड़वा में बइठ गेलन हल। बियाह गीत से चारो दिसा गूँजे लगल हल—

कुइआँ खँदली आउ बेटी बियाहली
तनिको न कइली विचार,
पोथी बनइते ब्राह्मण काँपलन
काँपी गेलन कुल परिवार,
अब धिया पराया घर जइतन
अब भेलन पर के आस।

मुदा मंगल गीत ऊ घड़ी मातम में बदल गेल हल, जब पता चलल हल कि मोटर साइकिल आउ रंगीन टी०वी० लेले बिना ऊ लड़की के बिदाई न करावे पर अड़ गेलन हे। बीच मड़वा में अप्पन धोती के खूँट सम्हालइत कमलेस बाबू तन के एलान कैलन हल। बात-बात पर भाई-बाप से लड़े-झगड़े वला बेटा आज आज्ञाकारी बेटा बनके बाप के पीठ के पीछे खड़ा हल। मण्डप में सन्नाटा छा गेल हल। नरायन बाबू सामने आयल ई परेसानी से हक्का-बक्का हलन। उनका कोई उपाय न सूझ रहल हल। उनकर बोलती बन्द होल हल।

पढ़ल-लिखल जउन लड़का के बड़ी नाज से रूपा वरमाला पेन्हयलक हल, अब ओकर ई व्यवहार से रूपा के मन कराह गेल हल। औरत के ही रनचंडी, काली, दुरगा, सीता आउ सावित्री कहल गेल हे। सबसे बड़ बात कि मरद के ताकत औरत के ही कहल गेल हे। तिनका के सहारा लेके सीता रावण से अप्पन अस्मिता के रक्षा कर लेलन, कृष्ण के पुकार करके भरल सभा में द्रौपदी अप्पन चीर हरन होवे से बचा लेलन, बीच रन में टूटल रथ में अपने अंगुली के कील बनाके कैकेई राजा दशरथ के जीता देलन हल, तऽ नरायन बाबू के पत्नी सीता भी पीछे रहेवाली कहाँ हलन। अप्पन पति के लचार, विवस देख के नरायन बाबू के पत्नी आगे चल अयलन। बहूभोज के दिन गाड़ी आउ टी०वी० देवे के वादा करके ऊ अप्पन सँजोगल पूँजी अप्पन बेटी के बिदाई करेला कहलन हल। बड़ी कहा-सुनी के बाद बिदाई के रसम होयल हल। वादा के मोताबिक सीता अप्पन सरीर के एक-एक गहना बेच के उधार-पइँचा लेके समधी के माँग पूरा कर देलन हल।

बियाह-सादी के बाद दहेज पर चरचा करइत रूपा राजेस के कहलक—'तोरा जइसन पढ़ल-लिखल लड़का के दहेज माँगना सोभा देहे ?'

राजेस मजाक करइत कहलन—'बाबू सतरह दुआरी घूम अइलथुन हल, तइयो तूँ हमरे ला बइठल हलऽ।' फिर तनी भावुक होइत रूपा के चेहरा अप्पन हाथ में लेके

कहलन—'एगो हमरा दहेज न लेवे से दहेज-प्रथा खतम हो जतइ ? एगो दीया जले से कहीं अँधेरा मिटऽ हे, इँजोर होवऽ हे ?

रूपा राजेस के जवाब देइत कहलक—'एक-एक दीया के जले से ही तो अनेको दीया जलऽ हे। तब जाके दिवाली होवऽ हे। रोसनी से दुनिया नेहा जाहे, जगमगा जाहे। तूँ एक कदम बढ़ाके तो देखऽ, जमाना हमरा साथ हे। आज तूँ मान लेबऽ, कल परिवार मान जयथुन। फिर टोला-टाटी, गाँव जेवार आउ दुनिया में सब कोई दहेज के खिलाफ अवाज उठयतन। एक दिन अइसन आवत जब सउँसे संसार में अज्ञान के अँधेरिया छँटत आउ ज्ञान के इँजोरिया फैल जायत। समझलऽ ?'

'हँऽ जी ! बिल्कुल समझ गेली । आज से हम दहेज के खिलाफ कमर कस लेही। बाबूजी केतनो कोसिस करतन, बाकि हम किरिया खाइत ही कि हम्मर दुन्नो छोट भाई के बिआह में दहेज न लेवल जायत।'

अभ्यास-पाठ

मौखिक :

1. (क) 'सूरज धीरे-धीरे मोमबती जइसन गल रहल हल'—ई वाक्य के माध्यम से कहानीकार का कहेला चाह रहल हे ?

(ख) धरती पर अन्धेरा पसर गेला पर कइसन दिरिस देखावल गेल हे ? बतावऽ ।

(ग) नारायन बाबू के सामने कउन समस्या आ गेल हे जेकरा से ऊ परेसान हथ।

(घ) 'आखिर कुहासा कब तक रहल हे, सूरज के किरन ओकरा चीर के निकलहीं जाहे'—ई वाक्य से कउन भाव के समझावले गेल हे ? स्पस्ट करऽ।

(ङ) 'हाय राम आ गेलो कइसन समइया' के माध्यम से का मतलब निकलऽ हे ।

(च) ई कहानी तोरा पर कउन छाप छोड़ रहल हे ? समझा के बतावऽ ।

लिखित :

1. कहानीकार ऋचा के परिचय चार वाक्य में देवल जाय ।
2. 'इँजोर' कहानी से का सनेस मिल हे ?

3. नायिका रूपा के चरित्र-चित्रन करऽ !
4. ई कहानी के नायक कउन हे ? ओकर चरित्र के बिसेसता बतावऽ !
5. बेटी के बियाह में कउन-कउन परेसानी होवऽ हे ?
6. सादी होला पर रूपा जब ससुराल जाहे, तब अप्पन पति से दहेज के बारे में का कहऽ हे ?
7. बियाह करइत घड़ी दुलहा पक्ष के लोग काहे ला रुस गेलन हल ?
8. कहानी के स़ीर्सक 'इँजोर' काहे देल गेल हे ?
9. कहानी सिल्प के आधार पर ई कहानी के कसउटी पर कसऽ।
10. दहेज के समस्या तूँ कइसे दूर कर सकऽ हऽ ? तीन गो उपाय बतावऽ।
11. सप्रसंग व्याख्या करऽ :—
हर बेटी के बाप राजा जनक बनके खड़ा हथन। पढ़ल-गुनल बेटी रहला के बाद भी नरायन बाबू आज ओही परेसानी से गुजर रहलन हे ।

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से पाँच गो सहचर–सब्द लिखऽ ।
2. पाँच गो मुहावरा चुनके अर्थ बतावइत वाक्य में प्रयोग करऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. कहानी के बींच में कविता आउ गीत देवल गेल हे। तोर विचार से ई कहाँ तक ठीक हे ?
2. नारी उत्थान से संबंधित कोई कहानी लिखऽ इया कहुँ से लाके किलास में सुनावऽ।
3. 'दहेज लेना-देना दुन्नो अपराध हे'—एकरा पर विद्यालय में एगो गोस्ठी के आयोजन करऽ !

सब्दार्थ :

आखरी — अंतिम
घोसला — खोंता
आपाधापी — दौड़-धूप
दस्तक — अवाज
बोरसी — टपोड़ी
मिंझा गेल — बुत गेल
अस्मिता — इज्जत